''सारे घोषणा पत्र प्रलोभन के पुलिंदे हैं''

आचार्यश्री महाप्रज्ञ

बीदासर, 29 मार्च।

राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवा समवसरण में अणुव्रत महासमिति के चुनावशुद्धि अभियान को संबोधित करते हुए फरमाया कि सभी पार्टियां चुनाव घोषणा पत्र निकालती है। वे सारे प्रलोभन के पुलिदें हैं। सभी बड़े–बड़े प्रलोभन देते हैं पर यह कोई नहीं कहते है कि हमारा उम्मीदवार पैसा नहीं बांटेगा, शराब नहीं पिलायेगा इसलिए उसे वोट दें। जब इस तरह के अनैतिक कार्य नहीं होंगे तभी चुनाव शुद्ध होंगे।

राष्ट्रसंत ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जब समाज सरकारी कार्यालयों और बड़ी–बड़ी संस्थाओं में नैतिकता का मूल्य ही नहीं आंका जायेगा तब चुनाव में नैतिकता कहां से आयेगी। उन्होंने कहा कि देश को आजाद हुए छठा दशक चल रहा है। इतने लंबे समय के बाद भी लोकतंत्र में नैतिकता जरूरी है या नैतिकता का प्रशिक्षण होना चाहिए, ऐसा स्वर केवल आचार्य तुलसी ने ही मुखरित किया है और कहीं से यह स्वर मुखरित नहीं हुआ हैं

आचार्यप्रवन ने फरमाया कि नैतिकता के बिना न्याय की आशा नहीं कर सकते। जब नैतिकता का महत्त्व ही नहीं समझा जायेगा तब न्याय कहां से होगा। उन्होंने कहा कि वर्तमान में धर्म के नाम पर बहुत कुछ चल रहा है। कारण स्पष्ट है, क्रियाकाण्ड पर बहुत ध्यान दिया जा रहा है, पर नैथ्तकता का स्थान नहीं है।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री ने फरमाया कि एक ऐसे सतत अभियान की जरूरत है जो समाज में नैतिकता के प्रति निष्ठा पैदा कर सकें। उन्होंने अणुव्रत महासमिति के कार्यकर्त्ताओं के द्वारा चलाये जाने वाले चुनाव शुद्धि अभियान की सरहाना करते हुए कहा कि अणुव्रत महासमिति के कार्यकर्त्ताओं के द्वारा चलाये जाने वाला अभियान दीपक के प्रकाश तुल्य है। पर यह प्रकाश भी सार्थक होगा क्योंकि इससे अनैतिकता, भ्रष्टाचार का अंधकार और गहरा नहीं हो सकेगा। उन्होंने कहा कि इस अभियान से मतदाता और मत प्राप्त करने वालों को यह सुनने को मिलेगा कि जो वह कर रहे हैं वह अच्छा है या नहीं इसका विवेक करें।

गांधी की कल्पना साकार नहीं हो सकी

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने फरमाया कि स्वतंत्रता के समय गांधीजी की कल्पना थी कि भारत ऐसा होगा जहां भ्रष्टाचार शराब आदि से दूरी होगी और नैतिकता को जीवन का अंग बनाया जायेगा। यह कल्पना केवल कल्पना ही रह गई है, साकार नहीं हो सकी। उन्होंने चुनाव में बढ़ते अशुद्ध वातावरण पर कहा कि आज देश के सामने बुराई है वह बड़ी समस्या नहीं है। उससे भी बड़ी समस्या है बुराई पर अंगुली नहीं उठ रही है। अणुव्रत समिति ने अंगुली उठाने का प्रयत्न किया है। यह अच्छा प्रयत्न है। उन्होंने

कहा कि चुनाव के समय क्या–क्या हो रहा है, राष्ट्र कहां जा रहा है इस पर चिंतन होना चाहिए।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि सभी दलों के प्रतिनिधियों को एक दूसरे पर झूठे आरोप लगाने से बचना चाहिए। गलत नितियों का खुलासा किया जा सकता है, पर जो नहीं है, उसका आरोप लगाना उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि जहां राष्ट्रहित का सवाल हो वहां पार्टी गोण हो जानी चाहिए।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि नैतिकता नहीं है तो अर्थ के संदर्भ में भी समस्या है, रोटी के संदर्भ में भी समस्या है और काम के क्षेत्र में भी समस्या पैदा हो सकती है। नैतिकता और सच्चाई एक ऐसा तत्व है जो समाज को अच्छा बनाने में और व्यक्ति को अच्छा रखने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। व्यवसाय व्यवहार में सत्य नहीं है, व्यापार में व्यापारी लोग सच्चाई नहीं रखते हैं मिलावटी माल बेचते हैं तो जनता के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ होता है। सत्य नहीं है तो जनता के साथ अन्याय हो सकेगा। लोकसभा के चुनाव सामने हैं किसी पार्टी पर झूठा आरोप नहीं लगाना चाहिए। आधाभूत बातें होती है उनका प्रभाव भी पड़ सकेगा और झूठी बात ज्यादा टिक नहीं पाती है। भाषण में भी नैतिकता और प्रमाणिकता रहती है तो मत प्राप्त करने का इच्छुक आदमी सही तरीके पर है ऐसा माना जा सकता है।

इस अवसर पर अणुव्रत प्रभारी मुनिश्री सुखलालजी ने अपने विचार व्यक्त किये। सुजानगढ़ के हाजी समसुद्दी ने अपने विचार व्यक्त किये।

– अशोक सियोल